

DPN 6502

मुण्डमाला तन्त्रोक्त स्तोत्र MUNDAMĀLĀ TANTROKTA STOTRA

Title :

Run. No. 7227

Cat. No. 218

Micro. No.

Subject Hymn २ स्तोत्र

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 17.8 x 6.2

Folios 7

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Missing 2-7, 8-12, 13, 14-22, 24, 26-27
Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

□ ॐ सतिन्द मयी नित्या सवन्निनाम नमस्कृतः ॥ सर्वसिद्धिपदा देवि नमामि परमेश्वरी

P. T. O.

२९८ मुण्डमाला लिखितो त्ति
स्तोत्रे

0 cmts.

5

10

15

१६ सर्वानन्दमयीनित्या सर्वस्माद्यनमस्कृतः॥ सर्वसिद्धिप्रदादिविनर्म
 मियत्रमञ्जरी॥१॥ ॥ श्रीनिदयवाच॥ देवदेवमहादेव पत्रमानन्दन
 चन॥ प्रसीदगुह्यवक्तुर्ने कथयस्यस्यैवद॥२॥ सर्वतन्त्रेषु मन्त्रेषु
 फयत्यत्र वक्तुम॥ ननु कायगुह्याणां यथाहं न वदन्तु॥३॥ जिः
 वडवाच॥ कथं न कथयिष्यामि गुह्यं यच्च वत्सामिक॥ श्रीसहावा नमः

सु० ३

वयवसं॥ अथ नाग्रथनवक्तुं मा लाना ननु वाधने॥४॥ पूजाविध
 यरुक्ताः १० वि० पूर्वमथापितं॥ विज्ञेययथनमोनां स्वयं मा लानां
 धक॥४॥ कृतनित्यक्रियाः १० वि० पूर्वमनुवित॥ यथा कालं यथाः
 लारुं रुकं ध्यानीयत्नः॥४॥ अन्योन्यममन्त्रया सिना निस्कलक
 नित॥ कीवयः ४ दिरिः ४ वः ४ दूः ४ नितर्जिः ४ नवानितः ४०॥ गणेशसुपंच

रि ४॥ नि ४॥ यसा ल्यवपृथकपृथक ॥ रताद्विजयधुमा निरि नैग्रथिव
किं नै ॥ ५॥ ॥ अथथयने लवके ४॥ यमो कालने स्वापिने ४॥ धुंममं गीधुगं
धीरु कलि लं गज निक्षिपन् ॥ ५३ ॥ सग्नन वा विष्ठा वा पि यी ९॥ यक्षा ली
ननय ॥ ५४ ॥ गुह्य दकन वकन कमु नी कू कूमनय ४॥ रावै म किं म
हका व गू गे वम लि स्रथा ॥ ५५ ॥ विवा स्य पूजय दी श्वे इ ह्यया वेवः

द्वित्र नूरुमा ॥ कालिनी दान मा गृह सर्व वस्था रुच्य धुर्व ॥ १२ ॥ काष्ठी कीः
सूत्र या द वि था र्व य प व म ध्व जी ॥ गुटि की जन स रू रा दि मा न ल्हा वा ट ना
दि हि ४ ॥ १३ ॥ मरु सिद्धि स्व न कुत्ता व स स्रत्ता य त दि वि ४ ॥ अर्धा द रु म
रु सानि मरु सिद्धि ४ व रू रु मा ॥ १४ ॥ व क च न्य न वि न्ना दि ज या कू स्र म
व र्व न त् ॥ अर्धा दत्ता मरु गानि सर्व कामार्थ सिद्धये ॥ १५ ॥ स्व न या वाः

र्थं दानं न यागिनी न रूचयिषः ॥ मरुता गीरुवदवी पा० पुष्पासिने क
 ले ॥ ११५ ॥ स्वयं रुकुमदला रुवे लाट्कर्मसाधनं । सुसिगलजले वापिः
 कस्तुत्रिकृत्सां निने ॥ ११६ ॥ कृष्टु (मला) क्वी डे ब सर्वसिद्धिस्त्रा रुव
 ता ॥ सार्धं वा निसंरुगं कृष्टु रुतमहमिदं ॥ ११७ ॥ विष्णुवा निसंरुगं (म
 ले) सिद्धिपदं रुवि ॥ मूलमनुष्यदवशि आकर्षणिरुयः ॥ ११८ ॥ अर्घ

१७

३

लपयं वयं नाराकं ॥ १२१ ॥ मल्लिकाविनिकाकाची नकपगयनिः
 कीर्तिनी अर्कपूष्यवर्तने वापियं वदनं ॥ १२२ ॥ अर्कम्यां वविषधे ॥ सः
 उरुगम्यां वनी ॥ पद्मपूष्या नन कन सै उरुगम्यवदवना ॥ १२३ ॥ क
 र्मावायदिवा गुह्यं कालिको वनदारुवन् ॥ वेने पूष्ये धैवि विदे ॥ १२४ ॥
 नमूरुन (मे) व उरु धूमावनीयना ॥ १२५ ॥ ॥ मल्लनजागपूष्ये न सै उ

१०

५

५

१०

१५

शकासिकाहवगा॥वनयूथेद्यदिविधिः४सीडक्षयावेनीयना४॥१३१॥अ
मलमुपजं६उक्षेप्यदीपावेगी॥अस्मीचक्रुद्धसांनानायूथेगीस
मावभत्॥१३२॥**ॐ**निधीमूलुमाहागनेकडुर्थपटल४॥५॥१३२॥॥ १८
शीद्ववाच॥नरुस्यामिनरुस्यैवपूनश्चयविधिंपुराशावदस्तयय
नृक्षाना**रु**र्वकामारुर्वतिहि॥॥०॥**श**नडवाच॥गृहीत्वासकुना

वमना रुवा ४। किमोयामरुभानि विद्यावस्तुद्वारा रुवा ४॥ १५३ ॥
अविद्याविश्रादुक्तदादवता ला कथा वर्नी। साहामाधनितिविद्यातावी
जलक्षिप्रकीर्तिता ॥ १५४ ॥ माया शक्ति किलकं व (मेवदरुमुदाहृतं
प्रपठंग निगतकुर्या मायया दीर्घमूकयं ४॥ १५५ ॥ ध्यानं दविष्यवद्वा
मि सर्वस्वर्यरुलपदं ॥ विद्युत्युजनिर्गदवित्रकपद्यासनहिता ४

४॥१७५॥ विभर्गवायसंयासां पाणिर्विहाति सानिगां। पीतत्रक (स्थन
 कषु कुमक पालमो किदं ॥१७६॥ नीलपिच्छुह विजालि वधु नि कथि
 गानि वी। रत्न भू लमदा वकुं ही ख वाय स गानि त ॥१७७॥ लस्य न्य वि
 द्य ह मा धा। मृग सदा न नि र्हय। क ह मृ डा त था या ग मृ डा व द ध गी क
 नो ॥१७८॥ मृ ल ग कि ध वा द वि स र्व सि धि रु न यु दं ॥ पू जा य तुं प व

२३

थ ४॥१७९॥ वृ न्दा य सु न ४ पू ष्ठा स र्व ता दि वि वि रु द्य ४। च उ द्वा न त
 न पू ष्ठा रु ग कि म्ना रु द्य ४॥१८०॥ रु ग म दा रु ग म द्या व वि धि ना वा
 म व न्म ता। न र्व र्से यू जि मा द वि व उ ल र्द ऊ र्प म नू ४॥१८१॥ हा मा दिः
 वि धि ना क र्वा द र्श ४। क म न ४ पि थ। अ न या वि ध या द वि म रु सि धि ध
 आ रु व न् ॥१८०॥ ध न वा न्यु र्वा न् च ग मि स्र धी र्ग म रु व ल ४॥ वा अ

०

७

वल् ॥११०॥ यनया विजया श्रेव पूष्यजि लिज यर्यज न ॥ पंच स दंड ऊर्ध्वं
मनुक्तया मादि दध्ना ॥१११॥ अ नया सदधी विद्या प्रिषू ला केषूः
वल् ॥११२॥ कवर्लं ज पूज लन कथिता कूल सुन्दरी ॥११३॥ ॐ हं सौ क रे
मादिना मरु धानि समस्त याहि पूज य न ॥ न किं विदुर्ल हं न स्य प्रिषू
ला क प्रिषू ला केषू विद्य न ॥११४॥ ॐ रु सा के शु खं सर्व दवा गता मना न्य